

रॉबर्ट वानॉय, ओटी इतिहास, व्याख्यान 2

फॉर्म आलोचना - गेरहार्ड वॉन रेड

समीक्षा

हम गेरहार्ड वॉन राड के बारे में बात कर रहे थे। मैं ओल्ड टेस्टामेंट के लिए वेलहाउज़ेन के स्रोत आलोचनात्मक दृष्टिकोण को संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूँ और गुंकल के फॉर्म महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के लिए इसका क्या अर्थ है, और फॉर्म क्रिटिकल पद्धति विकसित कर रहा हूँ, और फिर जिस तीसरे व्यक्ति को हमने देखना शुरू किया वह गेरहार्ड वॉन रेड था। अब, मैं उस जटिल सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ जिसे वॉन रेड ने तीन प्रस्तावों के उपयोग से विकसित किया है। उनमें से पहले दो मैंने आपको पिछले कक्षा समय में दे दिए हैं, मैं आपको आज दोपहर तीसरा देना चाहता हूँ। लेकिन आइए स्वयं को पुनः उन्मुख करने के लिए पहले दो पर संक्षेप में विचार करें।

1. "विश्वास के कथन" समग्र रूप से हेक्साटेच के पीछे खड़े हैं - क्रेडो ऊयूट 26:5ff2। हेक्साटेच विविध सामग्रियों का एक एकत्रीकरण है जिसे क्रेडो3 के मार्गदर्शन के तहत वर्तमान स्वरूप में बदल दिया गया है। समग्र रूप से हेक्साटेच को गैटुंग/सिट्ज़ इम लेबेन के रूप में समझा जाना चाहिए।

सबसे पहले, वॉन रेड कहते हैं कि वे क्या कहते हैं, "विश्वास के बयान" समग्र रूप से हेक्साटेच के पीछे खड़े हैं। उनका दावा है कि *हील्स गेस्चिचटे या मोक्ष इतिहास* के सिद्धांत तत्वों को व्यवस्थाविवरण 26:5 और निम्नलिखित में क्रेडो में संक्षेपित किया गया था। दूसरा, हेक्साटेच विविध सामग्रियों का एक समूह है, जिसे क्रेडो के मार्गदर्शन में वर्तमान स्वरूप में बदल दिया गया है। मैंने उन दो बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए उनके कुछ लेखों के कुछ उद्धरणों का उपयोग किया। तीसरा, गुंकल के शोध के संदर्भ में, समग्र रूप से हेक्साटेच को *गैटुंग के रूप में समझा जाना चाहिए*। उन्होंने उनकी आलोचनात्मक जांच की। इस प्रकार, विश्वास के कथन द्वारा दर्शाए गए प्रारंभिक चरणों के *सिट्ज़ इम लेबेन को पहचाना जा सकता है। आप उस कथन से देख सकते हैं*

कि वॉन राड हरमन गुंकल द्वारा गैटुंगया साहित्यिक प्रकारों और सिट्ज़ इम लेबेनकी शब्दावली में शुरू की गई परंपरा में आगे बढ़ रहा है, जो प्रत्येक विशेष साहित्यिक प्रकार या शैली का निर्माण करने वाले स्थिति प्रकारों को अलग करता है। वॉन रैड समग्र रूप से हेक्साटेच को प्रस्तुत करना चाहता है, सामग्री का संपूर्ण शरीर, आलोचनात्मक परीक्षण करना, और इसे संपूर्ण रूप से एक गैटुंग के रूप में मानना, और यह निर्धारित करना कि इसके शुरुआती चरणों में इसका सिट्ज़ इम लेबेन क्या है।

A. उस तीसरे बिंदु पर विस्तार से बताएं

अब, मैं हेक्साटेच की उनकी समस्या पृष्ठ 2 और 3 को पढ़कर उस तीसरे बिंदु पर विस्तार से बताता हूँ। वह कहते हैं, "इस जबरदस्त इमारत में एक मूल विचार का जटिल विस्तार" - वह इस सामग्री के निर्माण से लेकर विजय तक के बारे में बात कर रहे हैं। -द हेक्साटेच, जेनेसिस टू जोशुआ। "इस विशाल भवन में एक मूल विचार का जटिल विस्तार कोई पहला निबंध नहीं है और न ही ऐसा कुछ है जो इसकी क्लासिक परिपक्वता के अनुपात में अपने आप विकसित हुआ है। बल्कि, यह कुछ ऐसा है जो संभव है और जो पठनीय है उसकी अंतिम सीमा तक दबाया गया है। यह निश्चित रूप से विकास के प्रारंभिक चरणों से होकर गुजरा होगा। दूसरे शब्दों में, हेक्साटेच को एक गैटुंग के प्रतिनिधित्व के रूप में समझा जा सकता है और वास्तव में समझा जाना चाहिए, जिसके बारे में हम शुरुआती चरणों में सिट्ज़ इम लेबेन, रचना की स्थिति या परिस्थितियों और उसके बाद के विकास को पहचानने में सक्षम होने की उम्मीद कर सकते हैं, जब तक यह अत्यंत विस्तारित रूप में पहुंच गया जो अब हमारे सामने है।"

बी। अनुच्छेदों में विश्वास के वे कथन जैसे कि व्यवस्थाविवरण 26:5-9 में मूलमंत्र अब, मैं वॉन रैड द्वारा उपयोग की जाने वाली संपूर्ण संरचना और दृष्टिकोण के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। जैसा कि मैंने कहा, वह आलोचनात्मक पद्धति के साथ, हरमन गुंकल की पंक्ति का अनुसरण करते हैं। लेकिन वह इस तरह गुंकल से भटक जाता है। याद करें जब हमने गुंकल के बारे में आलोचना के रूप में बात की थी, कहानी इकाइयों को अलग किया था, और फिर उन्हें लेबल करने की कोशिश की थी - उनके साहित्यिक प्रकार या विभिन्न प्रकार के लेबल के साथ गैटुंग / वॉन

रैंड के साथ, वह व्यक्तिगत कहानी इकाइयों से लेकर हेक्साटेच की संपूर्ण संरचना तक अपने फॉर्म की आलोचनात्मक परीक्षा को निर्देशित करता है। व्यक्तिगत कहानियों के बजाय वह हेक्साटेच की संपूर्ण संरचना को देखता है। इसे वह विश्वास के इन कथनों को कहते हैं जो हेक्साटेच के पीछे खड़े हैं, विश्वास के कथन जो सामग्री के एकत्रीकरण, सभी कहानी इकाइयों को एक साथ खींचते हैं।

अब वह विश्वास के उन कथनों को व्यवस्थाविवरण 26:5-9 के मूलमंत्र जैसे अंशों में पाता है। हम शायद एक मिनट में उस पर गौर करेंगे क्योंकि मुझे लगता है कि आप वह बात समझ जाएंगे जो वह कहना चाह रहे हैं। व्यवस्थाविवरण 26 पहले फल की भेंट लाने के नियम देता है। जब इस्राएल देश में आता है, तो वे अपनी उपज की उपज लाते हैं और उन्हें पहला फल यहोवा को देना होता है। व्यवस्थाविवरण 26, पद 4 में आप पढ़ते हैं कि “याजक टोकरी को तेरे हाथ से ले लेगा, और उसे तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने रख देगा। तब तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने प्रगट करना। निम्नलिखित बातें श्लोक 5 से श्लोक 9 तक सूचीबद्ध हैं, यह हेक्साटेच के माध्यम से इतिहास के आंदोलन का एक संक्षिप्त सारांश है। यहाँ वह स्वीकारोक्ति है जो उसे करनी है। “मेरे पिता एक भटकते हुए अरामी थे, और वह कुछ लोगों के साथ मिस्र चले गए और वहाँ रहने लगे, और एक महान राष्ट्र बन गए, शक्तिशाली और असंख्य। परन्तु मिस्रियों ने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया, और हमें कष्ट दिया, और हम से कठिन परिश्रम कराया। तब हम ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने हमारी सुन ली, और हमारा दुख, परिश्रम और अन्धेर देखा। इस प्रकार यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा, बड़े भय के द्वारा, और चिन्हों, और चमत्कारों के द्वारा हम को मिस्र से निकाल लाया। वह हम को इस स्थान पर ले आया, और हमें यह देश दिया, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं; और अब मैं उस भूमि की पहली उपज ले आता हूँ जो हे यहोवा, तू ने मुझे दी है।

तो, आपको एक संक्षिप्त बायोडाटा मिलता है, आप कह सकते हैं, ईश्वर के शक्तिशाली कार्यों के बारे में, अपने लोगों को इब्राहीम से लेकर विजय काल तक भूमि पर लाना। वह बायोडाटा पूरे कालखंड के दौरान इतिहास की गतिविधियों का सारांश प्रस्तुत करता है। वह जो कहते हैं वह यह है कि विश्वास के वे कथन समग्र रूप से हेक्साटेच के पीछे खड़े हैं। इस *हील्स गोस्चिचटेया* मोक्ष इतिहास के पीछे विभिन्न सामग्रियां हैं जिन्हें इस क्रेडो के मार्गदर्शन में वर्तमान स्वरूप में आकार

दिया गया है, जैसा कि आप व्यवस्थाविवरण 26 में पाते हैं। वह जो करना चाहता है, वह समग्र रूप से हेक्साटेच की संरचना को समझना है - इसका साहित्यिक प्रकार, इसकी परिस्थिति, और वह एक सांस्कृतिक सेटिंग और इकबालिया सेटिंग में क्या पाता है। अंत में क्रेडो इन सबको एक साथ लाता है।

सी। जेईडीपी और हेक्साटेच के अंतिम फॉर्म से संबंध छात्र प्रश्न: क्या उन्होंने अब जेईडीपी और किसी भी दस्तावेज़ को त्याग दिया है?

नहीं बिलकुल नहीं। अब, इज़राइल के इतिहास के इस प्रकार के कई बायोडाटा हैं जो आपको व्यवस्थाविवरण 26 के अलावा पुराने नियम में मिलते हैं। यहोशू 24:2-13 एक और है जिसकी अक्सर अपील की जाती है। यहोशू 24:2-13; मैं इसे पढ़ने में समय नहीं लगाऊंगा, लेकिन आप इसे देख सकते हैं, वे बहुत समान हैं।

मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि वह जेईडीपी पर काम कर रहा है लेकिन वह इस पर एक अलग स्तर पर काम कर रहा है। यदि आप शुरुआत करने जा रहे हैं, तो आप पद्धतिगत रूप से उस अनुक्रम का पालन करेंगे जो आप इन विधियों के विकास में ऐतिहासिक रूप से पाते हैं। दूसरे शब्दों में, आप विभिन्न जेईडीपी दस्तावेज़ों में मैप किए गए पेंटाट्यूचल के वेलहाउजेन के स्रोतों से शुरुआत करेंगे। फिर आप गुंकल की फॉर्म क्रिटिकल विधि के साथ काम करेंगे, आप कह सकते हैं, और दस्तावेज़ों को छोटी-छोटी कहानी इकाइयों में विभाजित करेंगे, ताकि यह पता लगाया जा सके कि दस्तावेज़ सामग्री मौखिक परंपरा की जड़ों से कैसे अस्तित्व में आई। . लेकिन फिर, उस सब की वैधता को देखते हुए, वॉन रैड जैसा कोई व्यक्ति आएगा और कहेगा, "ठीक है, यह सब अच्छा है, और हम इसके साथ उस तरह से काम कर सकते हैं, लेकिन आइए अंतिम रूप को देखें। हमारे सामने जो कुछ है वह है - यहोशू की उत्पत्ति। अब, आइए उस अंतिम रूप के साथ काम करें। वह क्या है जो उस संरचना को अंतिम रूप देता है?" वह कहेंगे कि इस प्रकार की कंकाल रूपरेखा है जो आपको कुछ इकबालिया बयानों में मिलेगी, जिसने इब्राहीम से मिस्र, सिनाई और फिर विजय तक चीजों की गति को संरचित किया है। वह कहेंगे कि जिस चीज़ ने उस समग्र संरचना को जन्म दिया, वह इन चीज़ों का इकबालिया-सांस्कृतिक प्रकार का पाठ था। अब, मुझे

नहीं पता कि मैं इससे अधिक कुछ कह सकता हूँ या नहीं, लेकिन वह जेईडीपी को अस्वीकार नहीं करते हैं, वह इसे मानते हैं।

अंतिम रेडैक्टर वॉन रैड के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। रेडैक्टर, हम इसके साथ आगे बढ़ेंगे, जब हम रेडेक्शन आलोचना को देखेंगे। वेलहाउज़ेन के जेईडीपी स्रोतों के जोर में रिडक्टर एक तरह से खो गए थे। रेडैक्टर बाद में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है और स्रोतों को एक साथ संकलित करने में अधिक प्रमुख स्थान लेता है।

डी। इतिहास और हेल्सगोस्चिचटे मुझे वॉन रैड के बारे में कुछ और बातें बताने दीजिए। वॉन रैड इज़राइल के इतिहास के दो प्रकारों के बीच अंतर करते हैं। वह जिसे *इतिहास कहता है* - और उसका संदर्भ वैज्ञानिक इतिहासलेखन से है। दूसरे शब्दों में, यह इतिहास से इस अर्थ में संबंधित है कि वास्तव में क्या हुआ था। और जब वह उस अर्थ में इतिहास की बात करता है, तो वह *इतिहास शब्द का उपयोग करता है*। लेकिन वॉन रैड के विचार में, आपको पुराने नियम की सामग्री में *इतिहास के बारे में, यदि कुछ भी हो, बहुत कम मिलता है*। उनका कहना है कि पुराने नियम के खंड हमें *इतिहास नहीं देते*, बल्कि वे हमें *हेइल्सगोस्चिचटे* - मोक्ष का इतिहास देते हैं। वॉन रैड के अनुसार *हेल्सगोस्चिचटे*, "*इकबालिया इतिहास*" है। यह वास्तव में जो कुछ हुआ उसका इतिहास नहीं है, बल्कि इस बात की अभिव्यक्ति है कि इसराइल ने ईश्वर के साथ अपने संबंधों के बारे में कैसे सोचा। *हेइल्सगोस्चिचटे* एक इतिहास है जो इज़राइल के विश्वास द्वारा निर्मित और परिवर्तित हुआ है, वॉन राड के अनुसार यह कुछ ऐसा है जिस पर उन्होंने विश्वास किया और इसे आकार दिया, जरूरी नहीं कि ऐसा कुछ हो जो वास्तव में हुआ हो। ताकि आप उस द्वंद्व में वापस आ जाएं जिसके बारे में हमने पिछले कक्षा घंटे में बात की थी। वॉन रैड के साथ, आधुनिक इतिहासकारों द्वारा देखा गया इज़राइल का इतिहास, और इज़राइल के विश्वास से बना इज़राइल का इकबालिया इतिहास, जो दृश्य हम पुराने नियम में पाते हैं, दो बहुत अलग चीजें हैं।

तब आपको एक दिलचस्प मोड़ मिलता है। वॉन रैड की रुचि इसी में है। उसे *इतिहास की*, यानी वास्तव में क्या हुआ था, इसकी कोई परवाह नहीं है। जिस चीज़ में उनकी रुचि है वह *हेइल्सगोस्चिचटे* है, वह इतिहास जो इज़राइल के विश्वास का निर्माण था। मुझे उनके *पुराने नियम के*

धर्मशास्त्र को फिर से संक्षेप में पढ़ने दीजिए। यह उनका *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी* खंड एक, पृष्ठ 106 है। वह कहते हैं, "इस बिंदु पर और अगली कड़ी में, हम निश्चित रूप से सोच रहे हैं जब हम इतिहास के पाठ्यक्रम के बारे में सोचते हैं, जिन्हें इज़राइल के विश्वास ने ऐसा माना था। अर्थात्, पूर्वजों का आह्वान, मिस्र की भूमि से मुक्ति, कनान की भूमि का दान, आदि, न कि आधुनिक और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विद्वता के परिणाम, जिनसे इज़राइल का विश्वास असंबंधित था। यह एक कठिन ऐतिहासिक समस्या खड़ी करता है। पिछले 150 वर्षों में आलोचनात्मक ऐतिहासिक विद्वता ने इज़राइल के लोगों के इतिहास की एक प्रभावशाली संपूर्ण तस्वीर संकलित की है। जैसे ही इस प्रक्रिया को आकार दिया गया, इज़राइल के इतिहास की पुरानी तस्वीर जिसे चर्च ने पुराने नियम से प्राप्त और स्वीकार किया था, धीरे-धीरे नष्ट हो गई। इस प्रक्रिया से न तो पीछे मुड़ना संभव है और न ही यह अभी तक समाप्त हुई है। आलोचनात्मक ऐतिहासिक विद्वान इसे असंभव मानते हैं कि पूरा इज़राइल सिनाई में मौजूद था। या कि इसराइल ने लाल सागर पार किया और विजय हासिल की और एक समूह या समूह के रूप में बस गया। यह निर्गमन की पुस्तक की परंपराओं में खींचे गए मूसा के नेतृत्व को ड्यूटेरोनोमिस्ट और न्यायाधीशों की पुस्तक के समान 'अनैतिहासिक' मानता है जो न्यायाधीशों का वर्णन करता है। ये सारी चीज़ें वास्तव में उस तरह से नहीं घटित हुईं जैसा कि पुराने नियम की सामग्रियों में वर्णित है।

लेकिन वह कहते हैं, "दूसरी ओर, यह हेक्साटेच पर सबसे हालिया शोध है जो इज़राइल के साथ यहोवा के इतिहास को बचाने की पुराने नियम की तस्वीर की बेहद जटिल उत्पत्ति से निपटने से पहले हुआ है। विद्वान भी इसकी अनुमति देने लगे हैं"—और यहां, मुझे लगता है कि यह एक अद्भुत कथन है—लेकिन वह कहते हैं, "विद्वान हमारे इतिहास की उस तस्वीर को, जिसे इज़राइल ने स्वयं चित्रित किया था, अपनी स्वयं की वैज्ञानिक स्थिति की अनुमति देना शुरू कर दिया है।" यही वह *हेल्सगोस्चिचटे* है जिसके लिए वह एक वैज्ञानिक मान्यता प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। यह शब्द के वास्तविक अर्थों में और वास्तव में जो हुआ उसकी भावना में इतिहास नहीं है, लेकिन वह कहते हैं, "विद्वान अपने इतिहास की उस तस्वीर को अपने आप में वैज्ञानिक आधार देने की अनुमति देने लगे हैं जिसे इज़राइल ने स्वयं चित्रित किया था, और इसे कुछ के रूप में लेना शुरू कर दिया है अपने *आप में* दिलचस्प, जिसे जिस तरह से चित्रित किया गया है, उसे हमारे धार्मिक

मूल्यांकन में केंद्रीय विषय के रूप में ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इ। इतिहास को सहेजना जो विश्वास द्वारा तैयार किया गया था और तदनुसार चरित्र में इकबालिया है

उस पृष्ठ के नीचे, वह अब पृष्ठ 107 है, वह कहते हैं, "इस प्रकार हेक्साटेच हमें बचाने वाले इतिहास की एक तस्वीर दिखाता है जो विश्वास द्वारा तैयार किया गया था, और तदनुसार चरित्र में इकबालिया है चरित्र।" यह उनकी थीसिस का सार है: "विश्वास द्वारा तैयार किया गया इतिहास, चरित्र में इकबालिया है।" यही बात ड्यूटेरोनॉमिस्टिक इतिहास के लिए भी सच है जो इसराइल के बाद के इतिहास से लेकर निर्वासन तक का चित्रण करता है - यहोशू, न्यायाधीश, सैमुअल, किंग्स - यह एक ही बात है। तभी वह यह टिप्पणी करते हैं. "इज़राइल के इतिहास की ये दो तस्वीरें हमारे सामने हैं। आधुनिक आलोचनात्मक विद्वता का - यही वास्तविक *इतिहास* है - "और जिसे इज़राइल के विश्वास ने निर्मित किया है" - *हेल्सगोस्चिचटे* "दोनों हमारे सामने हैं और वर्तमान में हमें उन दोनों के साथ खुद को समेटना होगा।" उनका कहना है कि किसी एक या दूसरे के अस्तित्व के अधिकार पर विवाद करना मूर्खता होगी। एक है तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ, *इतिहास*। यह इतिहास की एक आलोचनात्मक तस्वीर बनाता है जैसा कि यह वास्तव में इज़राइल में था - *इतिहास*। निःसंदेह, उसके लिए मूसा की विजय की तस्वीरों का मतलब संपूर्ण मिस्र नहीं था।

वह कहते हैं, "दूसरी गतिविधि गोपनीय और व्यक्तिगत रूप से शामिल है।"--
हेल्सगोस्चिचटे। वह कहते हैं, "ऐतिहासिक जांच गंभीर रूप से सुनिश्चित न्यूनतम उद्देश्यों के लिए खोज करती है। लेकिन केरीगमैटिक चित्र धार्मिक अधिकतम की ओर प्रवृत्त होता है। यह तथ्य कि इज़राइल के इतिहास के बारे में ये दो दृष्टिकोण इतने भिन्न हैं, सबसे गंभीर बोझों में से एक है जो आज बाइबिल की विद्वता पर थोपा गया है। उनका कहना है कि यह एक समस्या है. वह इसे "बोझ" कहते हैं। तथ्य यह है कि इज़राइल में ये दो बोझ वास्तव में मौजूद हैं - लेकिन उनका कहना है कि आप किसी एक के अधिकार से इनकार नहीं कर सकते। फिर वे कहते हैं, "केवल एक की तस्वीर को ऐतिहासिक और दूसरे को अनेतिहासिक बताने से काम नहीं चलेगा।" लेकिन यहां उसे जो मिल रहा है वह यह है कि वह इस बात की वैधता प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है कि *हेल्सगोस्चिचटे* अपने आप में ऐतिहासिक कैसे है, भले ही यह उन चीजों के बारे में बात करता है जो घटित नहीं

हुई।

एफ। हेइल्सगेस्विचटे का निर्माण कैसे हुआ, यह उनके *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी* के खंड एक से पृष्ठ 106-108 है। यहां आपको फिर से यह अंदाज़ा हो जाएगा कि वह इन तीन बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए इस सिद्धांत को कैसे तैयार करता है। “कितनी पुरानी, अलग, जनजातीय या स्थानीय परंपराएँ हैं। पहले मुद्रा में काफी प्रतिबंध हेक्साटेच या ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास में थे। लेकिन अब, वे सभी इज़राइल से संबंधित हैं।” दूसरे शब्दों में, आपको अलग-अलग कहानी इकाइयों को एक मूल संदर्भ से बाहर निकाला जाता है, जिसका शायद इज़राइल से कोई लेना-देना नहीं होता है, और उन्हें सामग्री के इन ब्लॉकों में से एक के साथ बड़े विन्यास में जोड़ दिया जाता है जिसमें वे चलते हैं। उनका कहना है कि यह क्रेडो द्वारा एक साथ खींची गई विविध सामग्रियों का एकत्रीकरण है। वह कहते हैं, “कई पुरानी, अलग-थलग, आदिवासी कहानियाँ जो पहले मुद्रा में काफी प्रतिबंधित थीं, हेक्साटेच या ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास में शामिल की गई, लेकिन अब वे सभी इज़राइल से संबंधित हैं। इस प्रक्रिया में, पुरानी असंबद्ध परंपराओं को एक संदर्भ और व्याख्या दी गई है जो ज्यादातर मामलों में उनके मूल अर्थ से अलग थी। इतिहास में परंपराओं को शामिल करने के लिए शर्त, जो किसी भी तरह से स्वयं-स्पष्ट नहीं थी, यह थी कि उनमें से सभी, यहां तक कि छोटे कबीले के सबसे अस्पष्ट और मामूली लोग भी इज़राइल से चिंतित थे, और इसलिए इज़राइल से संबंधित थे। इज़राइल खुद को पारंपरिक घटक भागों में सन्निहित देखने और इज़राइल के इतिहास की महान तस्वीर में दर्ज किए गए अनुभव को स्वयं शामिल करने, अवशोषित करने और रिकॉर्ड करने के लिए तैयार था। यहां, अंत में, हम एक एकीकृत सिद्धांत पर आते हैं जिस पर इज़राइल की धर्मशास्त्रीय सोच श्रद्धापूर्वक प्रयास करती है जिसके लिए उसने अपनी सामग्री और विचार का आदेश दिया। यह इज़राइल था, ईश्वर की प्रजा, जो हमेशा एक इकाई के रूप में कार्य करती है, और जिसके साथ ईश्वर हमेशा एक इकाई के रूप में व्यवहार करता है।” मैं इसी पर रुकूंगा। हम लंबे समय तक चल सकते हैं, लेकिन यह फिर से उनकी थीसिस के केंद्र में है। वह कहते हैं, “शुरू से ही यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यह इज़राइल जिसके बारे में पुराने नियम के इतिहास की प्रस्तुति में बहुत कुछ कहने को है, विश्वास की वस्तु है, और विश्वास द्वारा निर्मित

इतिहास की वस्तु है।"

जी। वन्नॉय की प्रतिक्रिया अब, मुझे कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए। जैसा कि मैंने कहा है, वॉन रैड का दावा है कि *हेइल्सगोस्चिचटे* या मोक्ष का इतिहास इज़राइल के विश्वास के निर्माण से बना था। अब, जब आप उस पर विचार करते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको जो कहना चाहिए वह यह है कि वास्तव में मामला इसके विपरीत है। उसने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया है। इसे पीछे की ओर रखें। मुक्तिदायी इतिहास के प्रकटीकरण के संदर्भ में इज़राइल के विश्वास का पोषण और विकास हुआ। बाइबल इसी तरह चीज़ों को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। मुक्तिदायी इतिहास के प्रकटीकरण के संदर्भ में इज़राइल का विश्वास बढ़ा और पोषित हुआ। हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह आस्था और इतिहास के बीच का संबंध है।

एच। निर्गमन 14 उदाहरण

आइए निर्गमन 14 को इसके उदाहरण के रूप में देखें। निर्गमन 14 वह समय है जब इस्राएल ने मिस्र छोड़ा, जंगल में था, लाल सागर तक आया, और मिस्र उसका पीछा कर रहा था। इस्राएल भयभीत है, और वे नहीं जानते कि क्या करें। "अब यहोवा ने मूसा से कहा," पद एक, "इस्राएल के पुत्रों से कहो कि वे लौट आएं और मिग्दोल और समुद्र के बीच पीहहीरोत के साम्हने डेरे खड़े करें; तुम बालसपोन के साम्हने, उसके साम्हने, समुद्र के तीर पर डेरे खड़े करना। क्योंकि फिरौन इस्राएलियों के विषय में कहेगा, वे देश में व्यर्थ मारे मारे फिरते हैं; जंगल ने उन्हें बन्द कर दिया है।" इस प्रकार मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा; और फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी, और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। मैं अध्याय नहीं पढ़ूंगा, लेकिन अध्याय बताता है कि यहोवा ने इस्राएलियों के लिए लाल सागर के माध्यम से मार्ग प्रदान किया, फिर जब उन्होंने मिस्रियों का पीछा किया तो उन्हें नष्ट कर दिया। उस अध्याय के अंत में, हम श्लोक 29 में पढ़ते हैं, "इस्राएली लाल सागर के पार चले गए, उनके दाहिनी ओर बायीं ओर पानी की दीवार थी। उस दिन यहोवा ने इस्राएल को मिस्रियों के हाथ से बचाया। और इस्राएल ने मिस्रियों को समुद्र के किनारे मरे हुए देखा।" अब आप श्लोक 31 पर ध्यान दें।

"जब इस्राएलियों ने यहोवा द्वारा मिस्रियों के विरुद्ध दिखाई गई महान शक्ति को देखा , तो लोगों ने यहोवा का भय माना और उस पर और उसके सेवक मूसा पर भरोसा किया।" तो आप जो देखते हैं वह शब्द और कार्य दोनों द्वारा दैवीय हस्तक्षेप है, जो इज़राइल के विश्वास की प्रतिक्रिया प्राप्त करता है। वे उस पर प्रतिक्रिया करते हैं जो भगवान ने उन्हें इतिहास में दिया है। जब वह उन्हें बचाता है, तो वे प्रतिक्रिया देते हैं—उनका विश्वास उसी की प्रतिक्रिया है। तो मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं, ऐसी कई धारणाएँ हैं जो आप बना सकते हैं। वह दिव्य रहस्योद्घाटन, शब्द और कार्य द्वारा, शब्द द्वारा और इतिहास में हस्तक्षेप से, इज़राइल के विश्वास का आधार बनता है। शब्द द्वारा, कार्य द्वारा ईश्वरीय रहस्योद्घाटन, विश्वास का आधार बनता है। दूसरे शब्दों में, विश्वास बाइबिल के इतिहास की घटनाओं का निर्माण नहीं करता है, बल्कि ऐतिहासिक घटनाएं इज़राइल के विश्वास की प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं, यही क्रम है। वॉन रैड की प्रतिक्रिया ने इसे उल्टा कर दिया है। वॉन रैड का कहना है कि यह इतिहास इज़राइल के विश्वास का उत्पाद है। मैं वह कह रहा हूँ जिसका पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट रूप से समर्थन करता है, वह यह है कि विश्वास ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की प्रतिक्रिया है, जहां यह इतिहास में इज़राइल की ओर से एक कार्य था।

वॉन रैड के काम की तरह - अब, यहीं आपको पेचीदा चीज़ मिलती है। जिस चीज़ में उसकी रुचि है वह *हेइल्सगेशिचटे* --मोक्ष के इतिहास में है, और जिस चीज़ में उसकी रुचि है वह उसकी धार्मिक शिक्षा है, इसलिए जब वह इसकी व्याख्या करता है, यदि हम इसके नीचे के सभी सिद्धांतों को हटा सकते हैं, तो वह जो कई बार कहता है वह बहुत अलग नहीं है आप या मैं जो कहेंगे उससे। जब वह उनमें से कई पर चर्चा करता है तो उसके पास इन घटनाओं के धार्मिक महत्व के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि होती है। लेकिन आप देखिए, समस्या यह है कि *मोक्ष* इतिहास का वास्तव में जो हुआ उससे कोई संबंध नहीं है। तो फिर आप प्रश्न पूछें कि आस्था के आधार का आधार क्या है? यह प्रस्तुत विचारों के साथ एक अस्तित्वगत पहचान बन जाता है। लेकिन यह वास्तव में इतिहास में घटित किसी चीज़ में निहित नहीं है।

मुझे लगता है कि आप वहां पहुंच रहे हैं जिसे उन्होंने अनसुलझा छोड़ दिया है - वे कहते हैं कि इतिहास के ये दो दृष्टिकोण एक बोझ हैं। मुझे लगता है कि आज पुराने नियम के विद्यार्थियों पर सबसे बड़ा बोझ यह है कि यदि इनमें से दो चीज़ें मौजूद हैं तो हमें इस तथ्य के साथ खुद को

समेटना होगा कि वे उसी तरह मौजूद हैं। मुझे लगता है कि वह इस बात को बहुत कम महत्व देंगे कि यह कुछ ऐसा है जो भ्रामक है, कुछ ऐसा है जो कपटपूर्ण है, या ऐसा कुछ है। मुझे लगता है कि वह कहेंगे कि यह इज़राइल के विश्वास की अभिव्यक्ति है, यह कुछ सकारात्मक है। उन्होंने खुद को इस तरह से देखा - वे आबादी के एक तत्व, एक जनजाति से एक परंपरा लेते हैं, और वे उस अनुभव को पूरे इज़राइल पर लागू करते हैं। यह तब पूरे इज़राइल के लिए कुछ बन जाता है और वे इसे अपने विश्वास में निहित किसी चीज़ के रूप में व्यक्त करेंगे और इसे इस संपूर्ण संरचना में शामिल करेंगे। उसे लगेगा कि यह कोई वैध चीज़ है, कोई धोखाधड़ी वाली चीज़ नहीं। हमें इससे समस्या है, क्योंकि हम जो कुछ हुआ उससे चिंतित हैं, और यह निश्चित रूप से जो हुआ उसे विकृत करता है क्योंकि यह जो हुआ उसका गलत प्रतिनिधित्व है।

मैं। हेल्सगेस्विचटे और बाइबिल आस्था

मुझे लगता है कि आपकी ग्रंथ सूची में मेरे पास गेरहार्ड हासेल की एक प्रविष्टि है, *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी: बेसिक इश्यूज़ इन द करंट डिबेट*, तीसरा संस्करण। 1982, पृष्ठ 100। पृष्ठ 100 पर, गेरहार्ड हासेल ने फ्रैंस हेस्से नामक एक जर्मन विद्वान को उद्धृत किया है, जिसमें हेस्से कहते हैं: “हमारा विश्वास उसी से जीवित है जो पुराने नियम के समय में हुआ था। हमारा विश्वास उस पर टिका होना चाहिए जो वास्तव में घटित हुआ है, न कि उस पर जो केवल घटित होने की बात स्वीकार की गई है।” यह एक अच्छा कथन है; हमारा विश्वास उस पर निर्भर है जो होना ही था, न कि उस पर जो हमने स्वीकार किया है कि हुआ है।

अब, यह दिलचस्प है कि फ्रैंस हेस्से ने वह बयान दिया है, जो एक बहुत अच्छा बयान है, लेकिन मुझे लगता है कि हेस्से पुराने तरह के दस्तावेजी स्रोत की आलोचना के समर्थक हैं, न कि उस पर वापस जाएं जो वास्तव में हुआ था क्योंकि जब वह वहां वापस आते हैं, तो वहां वास्तव में जो हुआ उसका बहुत कम हिस्सा बचा है। लेकिन मुझे लगता है कि वह सिद्धांतों को बहुत स्पष्ट रूप से समझते हैं। मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। *इतिहास और हेल्सगेस्विचटे -- मोक्ष इतिहास* के बीच कोई भी अलगाव बाइबिल के विश्वास के लिए विनाशकारी है। आपको पुराने नियम में सत्य की एकीकृत अवधारणा के साथ काम करना होगा। केवल जब आस्था वास्तविक

इतिहास के तथ्यों पर आधारित हो, तभी उसकी कोई वैधता या महत्व हो सकता है। अब, यह हर चीज़ के पीछे एक बुनियादी सिद्धांत है। मुझे लगता है कि आपको इस पर विचार करने और इसे बनाए रखने की आवश्यकता है, क्योंकि आज उस विचार पर सभी प्रकार के हमले हो रहे हैं, और यदि आप सावधान नहीं हैं तो यह बहुत जल्दी हमारे विश्वास के आधार को नष्ट कर सकता है।

2. रियायती इंजीलवाद आइए 2., "रियायती इंजीलवाद" पर चलते हैं। ये विचार जिन पर हम वेलहाउज़ेन, गुंकल, वॉन रेड और उनकी पद्धतियों के आधार पर तैयार की गई सभी सामग्रियों पर चर्चा कर रहे हैं - उन विचारों को चुनौती नहीं दी गई है। जैसा कि मैंने पहले वेलहाउज़ेन के समय के आखिरी कक्षा घंटे में उल्लेख किया था, विलियम हेनरी ग्रीन ने वेलहाउज़ेन के सिद्धांतों का खंडन किया था। गुंकल और वॉन रेड के बारे में भी यही सच था। लेकिन इसके बावजूद, आज आप पाएंगे कि जब हम पुराने नियम की ओर आते हैं तो जो लोग बाइबिल की अशुद्धियों के प्रति प्रतिबद्ध हैं, वे तुलनात्मक रूप से कम हैं। मुझे लगता है कि आप पिछले 10-15 वर्षों में भी देखते हैं, इनमें से कुछ पद्धतियों के संबंध में इवेंजेलिकल हलकों में अधिक रियायती स्थिति की ओर एक प्रवृत्ति विकसित हो रही है। मुझे लगता है कि कई मामलों में पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक विश्वसनीयता और कार्यप्रणाली के क्षेत्रों में रियायतों पर अनावश्यक रियायत दी गई है जिसके साथ हम पुराने नियम की ऐतिहासिक सामग्रियों को देखते हैं।

अब, जब आप कुछ इंजील विद्वानों के पास आते हैं जो इनमें से कुछ बिंदुओं पर सहमत प्रतीत होते हैं, तो आप पाते हैं कि जिस केंद्रीय विचार को बढ़ावा दिया गया है, जिसके साथ मेरा कोई तर्क नहीं है, वह यह है कि बाइबिल का मूल संदेश इंगित करना है मसीह। मैं निश्चित रूप से इससे सहमत होऊंगा। मसीह पवित्रशास्त्र का केंद्र बिंदु है। लेकिन फिर उसके संबंध में जो दावा किया जाता है, वह मूल उद्देश्य है और संदेश प्रभावित नहीं होता है। जब हम बाइबिल की व्याख्या की अपनी पद्धति को इस हद तक संशोधित करते हैं कि हम ऐतिहासिक विवरणों के संबंध में त्रुटिहीनता को अस्वीकार कर देते हैं। दूसरे शब्दों में, थिसिस यह है कि आप पवित्रशास्त्र के केंद्रीय संदेश, मसीह में मुक्ति के संदेश को पकड़ सकते हैं, भले ही पुराने नियम के बड़े हिस्से की पुनर्व्याख्या की आवश्यकता हो, भले ही ये पाठ खुद को ऐतिहासिक बताते हों। वे इस बात पर

कायम रहेंगे कि उन ग्रंथों की इस तरह से पुनर्व्याख्या की जानी चाहिए जिससे यह प्रदर्शित हो कि वे वास्तव में ऐतिहासिक रूप से पढ़ने के लिए नहीं हैं, और जिन घटनाओं का वे वर्णन करते हैं वे वास्तव में घटित नहीं हुई थीं।

केवल सैद्धांतिक रूप से बात करने के बजाय, मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। मैं जिस पुस्तक का उपयोग करना चाहता हूँ वह बाइबिल को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने पर है। *क्या आप जो पढ़ते हैं उसे समझते हैं?* एच. एम. कुइर्ट द्वारा शीर्षक है। कुइर्ट एमस्टर्डम में फ्री यूनिवर्सिटी में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर हैं। उनकी कई पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। वह जीसी बर्कौवर के छात्र थे, और फिर फ्री यूनिवर्सिटी में धर्मशास्त्र संकाय में शामिल हो गए। उन्होंने यह छोटी सी किताब लिखी। *क्या बाइबल ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है?* कुइर्ट एक इंजीलवादी होने का दावा करेगा — खुद को उसी रूप में प्रस्तुत करेगा।

पृष्ठ 14 पर — वे कहते हैं, "यदि बाइबल ईश्वर का वचन होने का दावा करती है, तो क्या हम कम से कम यह नहीं मान लेंगे कि इसमें सब कुछ कम से कम वैसा ही हुआ जैसा बाइबल में वर्णित है?" जाहिर है जवाब है, नहीं। "इस बात पर ज़ोर देना कि सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा बाइबल में वर्णित है, वास्तव में बाइबल को खराब ढंग से पढ़ना है, या कम से कम सतही तौर पर। यदि कोई इसे शाब्दिक रिकॉर्ड के रूप में लेता है तो उसे पाठ के साथ छेड़छाड़ करनी होगी। स्वाभाविक रूप से, जो कुछ हुआ उसका शाब्दिक अर्थ वही है जो बाइबल बताती है, लेकिन कुछ ऐसी बातें भी बताई गई हैं जिनके बारे में बताया गया है कि वे वैसे नहीं हुईं।" अब, वह जिस तरह से यह कहते हैं वह बहुत स्पष्ट है। फिर वह उन चीजों के कई उदाहरण देता है जो उसे लगता है कि पुराने नियम के भीतर विरोधाभास हैं।

एक। ओटी इतिहास में समस्याओं और समाधानों के उदाहरण 1. उज्जिय्याह को दफनाना मैं उन सभी पर चर्चा नहीं करना चाहता, क्योंकि हम उस पर बहुत समय ले सकते हैं। उन सभी का उत्तर आसानी से दिया जा सकता है। आप इस नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण अध्ययन बाइबिल को ले सकते हैं और नोट्स को देख सकते हैं और इनमें से प्रत्येक का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन वह कहते हैं, "इनमें से कुछ उदाहरण पुराने नियम से लें। 1 और 2 इतिहास का लेखक हमें इस्राएल के

राजाओं की कहानियाँ सुनाता है, लेकिन कहानियाँ बिल्कुल वैसी नहीं बताता जैसा कि 1 और 2 राजाओं का लेखक बताता है। जिस किसी ने भी इज़राइल का इतिहास पढ़ा है, उसे इनमें से कुछ अंतरों का सामना करना पड़ा है। उदाहरण के लिए, 2 राजा 15:7 के अनुसार, राजा उज्जिय्याह को उसके पिताओं के साथ दफनाया गया था, लेकिन 2 इतिहास 26:23 हमें बताता है कि उज्जिय्याह को उसके कुछ रोग के कारण उसके पूर्वजों के साथ दफनाया नहीं गया था, बल्कि उनके पूर्वजों के साथ एक कब्रगाह में दफनाया गया था। . यहां कुछ संभावित समाधान हैं। एक, 2 इतिहास 26:23 वास्तव में कहता है, "उज्जिय्याह अपने पुरखाओं के पास सो गया और उसे उनके पास राजाओं के दफनाने के मैदान में मिट्टी दी गई, क्योंकि लोग कहते थे, 'उसे कुछ रोग हो गया है।'" यह संभव है कि 2 राजा 15 ने दिया हो। एक सामान्य संदर्भ और 2 इतिहास 26 के समान ही बात कर रहा है। दूसरी संभावना दूसरे मंदिर के अरामी शिलालेख से आती है जिसमें कहा गया है कि उज्जिया की हड्डियों को एक माध्यमिक दफन में ले जाया गया था जिससे अलग-अलग स्थानों में उसके दफन के दो संभावित संदर्भों की अनुमति मिली।

2. सुलैमान और हीराम के बीच व्यापार करने वाले शहर

1 राजा 9:11 में हमें बताया गया है कि राजा सुलैमान ने राजा हीराम को बीस इस्राएली नगर दे दिए। लेकिन 2 इतिहास 8:2 में, हम पाते हैं कि हीराम ने ये शहर सुलैमान को दे दिए। जब आप उन दो पाठों की तुलना करते हैं, तो आप देख सकते हैं कि वे एक ही चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि इसमें एक क्रम शामिल है। इतिहास में एक बिंदु पर, सुलैमान ने शहरों को हीराम को दे दिया, और बाद में हीराम ने उन्हें वापस दे दिया या इसके विपरीत, हीराम ने उन्हें सुलैमान को दे दिया और सुलैमान ने उन्हें वापस दे दिया। लेकिन वह इसे एक विरोधाभास के रूप में देखते हैं।

3. गोलियथ को किसने मारा? फिर सवाल यह है कि वास्तव में गोलियथ को किसने मारा, 2 सैमुअल 21:19 हमने पढ़ा कि एल्हानान ने दैत्य को मार डाला, लेकिन 1 क्रॉनिकल्स के लेखक ने

हमें बताया कि एल्हानान नाम का एक व्यक्ति लड़ाई में शामिल था और उसने गोलियत के भाई को मार डाला। जैसा कि हम 1 शमूएल 17 से जानते हैं, डेविड वास्तविक विशाल हत्यारा था। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि एल्हानान डेविड के लिए एक और पदनाम था जो उसके सिंहासन का नाम था। या यह संभव है कि गोलियत एक ऐसे व्यक्ति के लिए खड़ा हुआ जो विशाल आकार का था। तो उस समस्या का समाधान है, लेकिन वहाँ एक समस्या है। यदि आप इसमें शामिल संदर्भों को देखें तो यह एक पाठ्य समस्या है।

4. कुइर्ट का अनुचित निष्कर्ष लेकिन इस तरह के दृष्टांतों से कुइर्ट कहते हैं, “ये दृष्टांत हमें एक सरल प्रश्न बनाने के लिए कहते हैं: कौन सा लेखक चीजों को वैसे बताता है जैसे वे वास्तव में घटित हुईं, किंग्स के लेखक, या क्रॉनिकल्स के लेखक? या उनमें से कोई भी ऐसा नहीं करता? किसी भी मामले में, यदि हम ऐतिहासिक सटीकता के बारे में चिंतित हैं, तो हम इसे दोनों लेखकों में नहीं पा सकते हैं। चीजें ठीक वैसे नहीं हो सकती थीं जैसा कि किंग्स के पास है और जैसा कि इतिहास में कहा गया है। यह कहने का कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि सभी लेखक चीजों को वैसे ही दर्ज करते हैं जैसे वे घटित होती हैं।”

तो वह जो करता है वह 1 राजाओं और इतिहास में विरोधाभास स्थापित करता है। यह सिनॉट्रिक गॉस्पेल में न्यू टेस्टामेंट के समान है - मुझे यकीन है कि आप इससे परिचित हैं। सिनॉट्रिक गॉस्पेल में कथनों में सामंजस्य स्थापित करने की समस्याएँ हैं। किंग्स और क्रॉनिकल्स और सैमुअल के साथ सामंजस्य स्थापित करने में समस्याएँ हैं, जहाँ आपके पास समानताएँ हैं। मुझे नहीं लगता कि ये समस्याएँ सुलझने योग्य हैं। इन बातों के पर्याप्त उत्तर हैं। यहाँ वह उस पर एक सिद्धांत बनाने की कोशिश करता है। मैं बस यह नहीं सोचता कि यह अच्छी तरह से स्थापित है।

मैं देख रहा हूँ कि हमारा समय चला गया है। मैं इसके साथ आगे बढ़ना चाहता हूँ, और आपको एक अच्छा विचार देना चाहता हूँ कि वह इनमें से कुछ चीजों के साथ कैसा व्यवहार करता है और इसका कुछ विश्लेषण भी करता है। फिर हम वापस आएँगे और उस सी को उठाएँगे जिसे मैंने छोड़ दिया था।

स्टेफ़नी ईस्टमैन
द्वारा प्रतिलेखित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया